उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया : व्याख्या के आधार

अध्याय 9

आधुनिक अनुप्रयोग और नई वाचा

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1
पूरा होना 2
  पुराना नियम 2
  दोनों नियमों के बीच की अवधि 4
  नया नियम 5
अनुप्रयोग 8
  दिशा-निर्देश 9
    पुराना नियम 10
    नया नियम 11
  उदाहरण 13
उपसंहार 17

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया : व्याख्या के आधार

अध्याय नौ

आधुनिक अनुप्रयोग और नई वाचा

प्रस्तावना

हम सभी के अनुभव हैं कि हम जल्दी से भूल जाते हैं, लेकिन कुछ अनुभव हमें इतना प्रभावित करते हैं कि वे हमारे मन में हमेशा - हमेशा के लिए बस जाते हैं। शायद आपके लिए, यह तब रहा है जब आप पहली बार मसीह पर विश्वास में आए, आपके विवाह का दिन या किसी प्रियजन की मौत। चाहे वह कोई भी घटना हो, जब हम इन प्रकार के अनुभवों से गुजरते हैं, तो यह अनुभव चीजों को देखने के हमारे नजरिए को हमेशा के लिए बदल देते हैं। और यही बात मसीह के अनुयायियों के लिए भी लागू होती है विशेषकर तब,जब हम पवित्र शास्त्र को अपने आधुनिक जीवन में लागू करते हैं। हालाँकि बाइबल हमें उन कई बातों के बारे में बताती है जो परमेश्वर ने किए हैं, लेकिन मसीह में नई वाचा का आगमन एक महत्वपूर्ण घटना है जो आज हमारे जीवनो के लिए पवित्र शास्त्र के अनुप्रयोग सहित हर चीज़ को समझने के तरीके को बदल देती है।

हमारी श्रृंखला *उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया* का यह नवां अध्याय है: *व्याख्या के आधार,* और हमने इसका शीर्षक रखा है “आधुनिक अनुप्रयोग और नई वाचा।” इस अध्याय में, हम पता लगाएंगे कि मसीह में नई वाचा को, उन तरीकों का मार्गदर्शन कैसे करना चाहिए जिनमें हम संपूर्ण पवित्र शास्त्र को स्वयं अपने समय में लागू करते हैं।

हमारे पहले अध्याय में, हमने सीखा कि जब हम बाइबल को अपने जीवनों में लागू करते हैं तो हमें पुराने नियम में युगांतरिक विकासों को कैसे स्वीकार करना चाहिए। और हमने देखा कि एक कहानी संपूर्ण बाइबल के इतिहास को रेखांकित करती है। बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर अपने स्वर्गीय सिंहासन से तेजस्वी महिमा के साथ राज्य करता है, और उन सबके बावजूद जो उसका विरोध करते हैं, अपनी दृश्यमान महिमा को स्वर्ग से पूरी पृथ्वी पर फैलाने का उसका लक्ष्य शुरूआत से रहा है। उसके स्वरूप में बनाए गए प्राणियों के रूप में, परमेश्वर ने अपनी महिमा के निर्णायक प्रदर्शन की तैयारी में मनुष्यों को पृथ्वी को भरने और उस पर राज्य करने के लिए नियुक्त किया। और जब परमेश्वर की महिमा हर जगह चमकती है, तो प्रत्येक प्राणी उसकी आराधना और स्तुति अनंतकाल के लिए करेगा।

हमने यह भी ध्यान दिया था कि बाइबल की इस अंतर्निहित कहानी का नाटक छह प्रमुख अध्यायों, या युगों में विकसित हुआ, जो एक दूसरे पर संचयी रूप से निर्मित हुए: आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद के काल का वाचा वाला युग और मसीह में नई वाचा। इन युगांतरिक विकासों की संचयी प्रकृति हमें याद दिलाती है कि, जबकि परमेश्वर के लोगों को अतीत के तरीकों से परमेश्वर की सेवा करने की ओर कभी नहीं लौटना चाहिए, उन्हें अतीत से मिले सबक को स्वयं अपने समय के लिए उचित रीति से लागू करना भी याद रखना चाहिए।

इस अध्याय में, हम दो चरणों में आधुनिक अनुप्रयोग और नई वाचा का पता लगाएंगे। सबसे पहले, हम मसीह में नई वाचा की पूर्ति को देखेंगे। और दूसरा, हम देखेंगे कि कैसे नई वाचा को आज पवित्र शास्त्र के हमारे अनुप्रयोग का मार्गदर्शन करना चाहिए। आइए मसीह में नई वाचा की पूर्ति के साथ शुरू करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पूरा होना

हम विशेष अनुभवों के वास्तव में होने से पहले अक्सर कल्पना करते हैं कि वे किसके समान होंगे - जैसे किसी प्रतियोगिता को जीतना या जीवन में किसी नए चरण में प्रवेश करना। लेकिन कई बार, हम अनुभवों को अपनी अपेक्षा से विपरीत या अलग पाते हैं। ठीक ऐसे ही, बाइबल के समय में भी परमेश्वर के लोगों के लिए इसी प्रकार की बात सच थी। मसीह के आने से पहले, परमेश्वर ने इस बात पर कि वह मसीह के माध्यम से क्या हासिल करेगा, कई अंतर्दृष्टि अपने लोगों के लिए प्रकट की। लेकिन जब अंतः मसीह में नई वाचा आ गई, तो यह बिल्कुल भी वैसा नहीं था जैसे कि उसके लोगों ने कल्पना की थी।

यह कैसे हुआ यह देखने के लिए, हम पवित्र शास्त्र में नई वाचा की पूर्ति के तीन पहलूओं को देखेंगे। सबसे पहले, हम उन दृष्टिकोणों पर विचार करेंगे जो पुराने नियम में दिखाई देते हैं। दूसरा, हम उन दृष्टिकोणों का वर्णन करेंगे जो दोनों नियमों के बीच की अवधि के दौरान विकसित हुए। और तीसरा, हम वर्णन करेंगे कि नया नियम कैसे नई वाचा की पूर्ति को संबोधित करता है। आइए नई वाचा पर पुराने नियम के दृष्टिकोणों के साथ शुरू करें।

पुराना नियम

नई वाचा के लिए पुराने नियम की आशा उन वचनों से उठती है जिन्हें यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के माध्यम से परमेश्वर ने तब बोला, जब उसने 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम के विनाश के समय सेवा की थी।

बेबीलोन की बँधुआई के माध्यम से यहूदा के खिलाफ आने वाले गंभीर दंडों के बावजूद, यिर्मयाह 31:31-34 में, परमेश्वर ने भविष्य के लिए एक महान आशा की घोषणा की। वहाँ पर यह क्या कहता है उसे सुनिए:

> "फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बाँधूँगा ... मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, ... क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा" (यिर्मयाह 31:31-34)।

परमेश्वर के लोगों के लिए इस अनुच्छेद ने कई चमत्कारिक आशाओं को जगाया। जैसा कि हम यिर्मयाह 31:31 में पढ़ते हैं, परमेश्वर इस्राएल के उत्तरी राज्य, और यहूदा के दक्षिणी राज्य दोनों के साथ नई वाचा बाँधेगा। यह नई वाचा विफल नहीं होगी क्योंकि, जैसा कि पद 33 समझाता है, कि परमेश्वर अपनी व्यवस्था को "उनके मनों में" और "उनके हृदयों में समवाने" के आदर्श कार्य को पूरा करेगा। और जैसा कि पद 34 संकेत देता है, कि ये आशीषें कभी समाप्त नहीं होंगी क्योंकि परमेश्वर स्थायी रूप से उनके पाप "क्षमा करेगा" और "फिर स्मरण न करेगा।" जब हम नई वाचा के युग के लिए इन आशाओं पर विचार करते हैं, तो इससे महान किसी और बात की कल्पना करना कठिन है।

हमारे अध्याय में इस बिंदु पर, हम यह देखना चाहते हैं कि पुराने नियम ने नई वाचा की इन आशाओं की पूर्ति के साथ कैसे कार्य किया। शुरूआत करने के लिए, यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने शुरू में इन आशीषों को तब देने की पेशकश की जब वह इस्राएल को बँधुआई से लौटा लाएगा।

जैसा कि अभी हमने पढ़ा, यिर्मयाह 31:31 सिर्फ एक अस्पष्ट अभिव्यक्ति के साथ शुरू होता है "ऐसे दिन आनेवाले हैं," लेकिन तात्कालिक संदर्भ में यह अस्थायी टिप्पणी एकदम सटिक थी। यिर्मयाह 31:31-34, यिर्मयाह की पुस्तक के उस बड़े खंड का हिस्सा है जिसे पुनर्स्थापना की पुस्तक कहा जाता है, जो यिर्मयाह 30:1–31:40 तक जाता है। यह खंड इस नाम को इसलिए धारण करता है क्योंकि यह

बँधुआई के कई विवरणों का और उन आशीषों का पूर्वाभ्यास करता है जो बँधुआई के बाद आएंगी। पुनर्स्थापना की पुस्तक की शुरूआत के पास यिर्मयाह 30:3 में, जो यह कहता है उसे सुनिए:

> क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आते हैं कि मैं अपनी इस्राएली और यहूदी प्रजा को बँधुआई से लौटा लाऊँगा; और जो देश ... उसमें उन्हें लौटा ले आऊँगा, ... " (यिर्मयाह 30:3)।

"ऐसे दिन आते हैं" वाली अभिव्यक्ति इस पद में भी दिखाई देती है, जैसे कि यह यिर्मयाह 31:31 में नई वाचा की भविष्यवाणी की शुरूआत में दिखाई देती है। और इस पद में, ऐसे दिन आते हैं, स्पष्ट रूप से उस समय के साथ जुड़ा हुआ है जब परमेश्वर अपने लोगों को "बँधुआई से वापस लौटा लाएगा और उन्हें देश में पुनर्स्थापित करेगा।"

इस प्रकाश में, यह स्पष्ट है कि यिर्मयाह 31:31 ने शुरूआत में नई वाचा को प्रतिज्ञा किए हुए देश में इस्राएल की पुनर्स्थापना के साथ जोड़ा। पुराने नियम के परिप्रेक्ष्य से, इस्राएल की पुनर्स्थापना "बाद के दिनों," में या "अंतिम दिनों" में इतिहास के समापन के समय होगी। इसमें नई वाचा की स्थापना के साथ-साथ बँधुआई से इस्राएल की वापसी, यरूशलेम और उसके मंदिर का निर्माण, दाऊद के अभिषिक्त पुत्र का पूरे संसार पर राज्य, और सृष्टि का नवीकरण शामिल है।

यिर्मयाह 29:10-14 में, परमेश्वर ने यिर्मयाह को यह भी बताया कि नई वाचा के युग की स्थापना की आशा कब करनी है। भविष्यद्वक्ता ने जो कहा, उसे सुनिए:

> यहोवा यों कहता है: "बेबीलोन के सत्तर वर्ष पूरे होने पर मैं तुम्हारी सुधि लूँगा, और अपना यह मनभावना वचन कि मैं तुम्हें इस स्थान में लौटा ले आऊँगा, पूरा करूँगा। ... तब उस समय तुम मुझ को पुकारोगे और आकर मुझ से प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूँगा। ... और तुम को उन सब जातियों और स्थानों में से जिनमें मैं ने तुम को जबरन निकाल दिया है, और तुम्हें इकट्ठा करके इस स्थान में लौटा ले आऊँगा ... " (यिर्मयाह 29:10-14)।

यहाँ परमेश्वर ने एक आशा उन्हे दिलाई है कि यदि इस्राएल "उसको पुकारेगा और आकर उस से प्रार्थना करेगा," तब परमेश्वर उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश में सत्तर वर्ष में "लौटा ले आएगा।" इसी समय-सारणी को यिर्मयाह 25:12 में प्रकट किया गया है।

तथ्य के रूप में, 538 ईसा पूर्व में परमेश्वर ने फ़ारसी सम्राट कुस्रू को, इस्राएल को प्रतिज्ञा किए हुए देश में लौटने के लिए आज्ञा देने हेतु उभारा। इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि 2 इतिहास 36:20-22 में, इतिहास के लेखक ने इस बात को लिखने के साथ अपनी पुस्तक को समाप्त किया कि यिर्मयाह वाली सत्तर वर्ष की बँधुआई इस समय पर पूरी हो गई थी।

लेकिन उन कई अन्य आशीषों का क्या होगा जो अंतिम दिनों में, नई वाचा के दिनों में आने वाली थीं? दुःखद बात यह है कि, जो लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश लौटे थे वे बार-बार परमेश्वर की व्यवस्था पालन करने में असफल रहे। और परिणामस्वरूप, यिर्मयाह 31 में पहले से बताई गई नई वाचा की महान आशीषों को टाल दिया गया।

यही वह बात है जिसे दानिय्येल 9:24 में, दानिय्येल ने जाना जब परमेश्वर ने उसे 70 वर्ष वाली यिर्मयाह की भविष्यवाणी की पूर्ति के बारे में वचन भेजा:

> तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिये सत्तर "सप्ताह" ठहराए गए हैं कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो, और पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित किया जाए, और युग-युग की धार्मिकता प्रगट हो; और दर्शन की बात

> पर और भविष्यद्वाणी पर छाप दी जाए, और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए (दानिय्येल 9:24)।

जैसा कि यह अनुच्छेद सूचित करता है, परमेश्वर ने अंतिम दिनों, नई वाचा के दिनों की और अधिक आशीषों को "सत्तर 'सप्ताहों'" के लिए स्थगित करने को ठहराया, जो यिर्मयाह के मूल सत्तर वर्षों से सात गुणा और लंबा समय है। उस समय पर, नई वाचा की आशाएँ पूरी होंगी। अधर्म समाप्त हो जाएगा, पाप का अन्त हो जाएगा, प्रायश्चित पूरा किया जाएगा, धार्मिकता प्रगट होएगी, दर्शन की बात पर और भविष्यद्वाणी पर छाप दी जाएगी, और परमपवित्र स्थान का अभिषेक किया जाएगा।

> जब दानिय्येल 70 वर्ष की बँधुआई के बारे में यिर्मयाह की भविष्यवाणी के विषय में प्रार्थना कर रहा है, तो वह प्रार्थना कर रहा है कि, "समय अब लगभग पूरा हो गया है। हे प्रभु, हो क्या रहा है?" और जो उत्तर उसे दिया जाता है, वह है कि, यह सिर्फ 70 वर्ष नहीं है, लेकिन यह 70 सप्ताहों के वर्ष भी हैं, उन सभी उपेक्षाओं के लिए जो हुई थीं, भूमि अपने सब्त का समय पूरा कर रही है। पवित्र शास्त्र की व्याख्या करने के संदर्भ में, कुछ ऐसा जो हमें सुझाव देता है कि, कभी-कभी ऐसा आयाम होता है जहाँ परमेश्वर *सचमुच* में वही करता है जो प्रतिज्ञा की गई थी, लेकिन इसका यह भी आयाम है, जहाँ इसके कुछ अन्य निहितार्थ हैं जिन्हें कभी-कभी बाद में भविष्यवाणी के माध्यम से लाया जाता है। इसलिए, उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, आपके पास अक्सर पुराने नियम का चित्रण होता है जिसे पुराने नियम की तुलना में अलग रीति से उपयोग किया गया है। स्पष्ट रूप से प्रकाशितवाक्य मिस्र पर हुई उन महामारियों के बारे में बात नहीं कर रहा है, लेकिन इसकी तुलना करने के लिए कि परमेश्वर कैसे दंड ला रहा है, हमारे पास महामारियों के चित्रण को प्रकाशितवाक्य में फिर से उपयोग में लाया गया है। इसलिए, जब हम पवित्र शास्त्र को पढ़ते हैं तो हमें इसके लिए मनों को खुला रखने की आवश्यकता है, जब हम पढ़ते हैं कि कैसे बाद के लेखक, पहले वाले लेखकों के साथ कार्य कर रहे हैं। मेरा तात्पर्य है, एक मायने था जिसमें 70 वर्ष की बँधुआई थी, लेकिन एक दूसरा मायने भी था जो परमेश्वर के मन में था कि दानिय्येल को कभी भी पता नहीं चलेगा यदि यह बात उसे स्वर्गदूत द्वारा नहीं दिखाई जाती।
>
> — डॉ. क्रेग एस. कीनर

हमने देखा कि पुराने नियम में, लोगों की अनाज्ञाकारिता के कारण नई वाचा की संपूर्ण सीमा को स्थगित कर दिया गया था। अब आइए दोनों नियमों के बीच की अवधि को देखें — पुराने और नए नियमों के बीच का समय — और ऐसे कई दृष्टिकोण जो यिर्मयाह की भविष्यवाणी के संबंध में इस्राएल में विकसित हुए, विशेषकर यीशु की सांसारिक सेवा से ठीक पहले के दिनों में।

दोनों नियमों के बीच की अवधि

पहली सदी में हर किसी के लिए यह स्पष्ट था कि यिर्मयाह की नई वाचा वाली भविष्यवाणी अभी तक पूरी तरह से पूरी नहीं हुई थीं। नए नियम के अभिलेखों और पुरातत्व के खोजों से संकेत मिलता है कि इस्राएल के लोगों के बीच विभिन्न धार्मिक गुटों में अलग-अलग दृष्टिकोण थे, लेकिन कई बुनियादी मुद्दों पर व्यापक सहमति थी।

दोनों नियमों के बीच की अवधि के अंत में, अधिकांश रब्बी लोगों ने इतिहास के दो महान युगों के संदर्भ में अंतिम दिनों की आशा, या नई वाचा के युग की बात की।

सबसे पहले स्थान पर, उन्होंने पहले के इतिहास और अपनी वर्तमान परिस्थिति को "इस युग" के रूप में संदर्भित किया। बँधुआई में परमेश्वर के लोगों के ऊपर बुराई की स्पष्ट जीत ने इस युग को असफलता, दुःख और मृत्यु के काल के रूप में चिह्नित करने के लिए रब्बी लोगों की अगुवाई की।

दूसरे स्थान पर, रब्बी लोगों ने "आने वाले युग" के रूप में, इतिहास के दूसरे महान युग, भविष्य की महिमा के समय के बारे में भी बात की। आने वाले युग को "अंतिम दिनों," "परमेश्वर के राज्य" के रूप में, और नई वाचा के युग रूप में भी जाना जाता है। रब्बी लोगों ने उम्मीद की थी कि जब आने वाला युग आ जाएगा, तो इतिहास के लिए परमेश्वर के उद्देश्य पूरे हो जाएंगे। वह अपने पश्चातापी, बँधुआई वाले लोगों को बड़ी संख्या में लौटा लाएगा, दाऊद के सिंहासन को पुनर्स्थापित करेगा, अपने राज्य को पूरे संसार भर में फैलाएगा, उनके खिलाफ दंड को लेकर आएगा जो परमेश्वर और दाऊद के पुत्र के अधीन समर्पण करने से इंकार करेंगे, और अब्राहम की आशीषों को पृथ्वी की छोर तक फैलाएगा।

इसके अलावा, इस्राएल में रब्बी लोगों की बड़ी संख्या ने यह भी सिखाया कि इस युग से आने वाले युग में निर्णायक बदलाव दाऊद के महान पुत्र, मसीहा के दिखाई देने के साथ शुरू होगा। मसीहा विश्व इतिहास में एक महान मोड़, अर्थात पराजय से जीत, बुराई से धार्मिकता, मृत्यु से अनंत जीवन, और अंधकार से परमेश्वर की भव्य महिमा से भरे हुए संसार जैसे बदलाव लेकर आएगा।

पुराने नियम व दोनों नियमों के बीच की अवधि की इस पृष्ठभूमि के इन दृष्टिकोणों के साथ, आइए देखें कि कैसे नए नियम ने नई वाचा वाली यिर्मयाह की आशा के पूरे होने को समझाया।

नया नियम

हम सभी जानते हैं कि अपने चेलों के साथ अंतिम भोज में यीशु ने कटोरा लिया और कहा, "यह कटोरा मेरे लहू की नई वाचा है।" इसके अलावा, पौलुस ने स्वयं को और अपने साथियों को "नई वाचा के सेवक" कहा। और इब्रानियों की पुस्तक यिर्मयाह 31 को संदर्भित करती है और पुष्टि करती है कि मसीही लोग नई वाचा के युग में रहते हैं। लेकिन जब हम, जो हमारे समय में हो रहा है उसकी तुलना यिर्मयाह 31 में नई वाचा के विवरण से करते हैं, तो हमें एहसास होता है कि हमारे लिए नई वाचा वाली प्रतिज्ञाओं को उनकी पूर्णता में देखना अभी बाकी है। परमेश्वर की व्यवस्था सिद्धता के साथ हमारे दिमागों और मनों में नहीं लिखी गई है। कलीसिया में लोगों को अभी भी प्रभु को जानने के लिए कहने की आवश्यकता है। हमें अभी भी अपने पापों की क्षमा माँगने की आज्ञा दी जाती है। इसलिए, जब कि यिर्मयाह की बहुत सारी अपेक्षाएँ अभी भी पूरे होने बाकी हैं, तो हम कैसे नई वाचा के युग में हो सकते हैं? इसका उत्तर उस रहस्य में मिलता है जिसे परमेश्वर ने मसीह में प्रकाशित किया, कि वह कैसे नई वाचा की पूर्ति को प्रकट करने जा रहा था।

नए नियम के विभिन्न लोगों ने इन बातों को अलग-अलग तरीकों से संबोधित किया। उदाहरण के लिए, यीशु ने, अपने कई दृष्टांतों में घोषणा की, कि, परमेश्वर का राज्य उसकी सांसारिक सेवकाई के साथ शुरू हो गया था, जो धीरे-धीरे समय के साथ बढ़ता जाएगा, और अंततः अपने चरमोत्कर्ष में पहुँचेगा जब वह महिमा में वापस लौटेगा।

प्रेरित पौलुस ने इस तथ्य का उल्लेख करते हुए इन बातों को इफिसियों 3:3-5 जैसे स्थानों में संबोधित किया, कि अंतिम दिनों से संबंधित भेद अतीत में लोगों से छिपा कर रखा गया था, लेकिन अब मसीह में प्रगट किया गया था।

पौलुस ने रोमियों 11:25 और 16:25-26 और कुलुस्सियों 1:26-27 जैसे कई अन्य स्थानों में भी इस भेद का उल्लेख किया। इन और अन्य अनुच्छेदों में, पौलुस ने मसीह में अंतिम दिनों पर मसीही

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दृष्टिकोण के विभिन्न पहलुओं को भेद के रूप में संदर्भित किया क्योंकि उन्हें पहली की पीढ़ियों से छिपा कर रखा गया था।

> पौलुस की पत्रियों में कई स्थानों पर वह सुसमाचार के बारे में या एक भेद होने के रूप में सुसमाचार के विभिन्न पहलुओं के बारे में बोलता है, यूनानी में एक *मुस्टेरियोन*। और भेद से उसका अर्थ कोई रहस्यमयी, बादल जैसी चीज़ नहीं है जो अचानक से सामने प्रतीत हो गई है या कोई ऐसी पहली जिसे कोई हल नहीं कर सकता है। जैसा कि नए नियम के एक विद्वान ने इसका वर्णन किया है, पौलुस के लिए भेद कुछ ऐसा था जिसे परमेश्वर ने सहज दृष्टि में छिपा रखा था, पुराने नियम में सहज दृष्टि में कुछ छिपा हुआ। और अब यह कुछ ऐसा है, मसीह के दिखाई देने में स्पष्ट करते हुए प्रकाशन के माध्यम से, लोग पीछे मुड़कर देख सकते हैं और कह सकते हैं, "आहा देखो! देखो वहाँ क्या है।" इसलिए, ऐसा नहीं है कि पौलुस कुछ ऐसा पेश कर रहा है जो वहाँ नहीं है, लेकिन वह कह रहा है, "उस पर दृष्टि डालो जिसे हम नहीं देख पाए हैं, उस पर दृष्टि डालो जो वहाँ है" ... और कई मायनों में, आने वाले मसीहा के बारे में और यहूदियों और अन्यजातियों की एकता के बारे में सच्चाई पुराने नियम में, भजन में और यशायाह में ठीक वहाँ पर है, बल्कि उनका एक साथ आना ... कि "यहाँ क्या है उस पर दृष्टि डालो; ये सभी टुकड़े एक साथ कैसे फिट बैठते हैं उस पर दृष्टि डालो" परमेश्वर द्वारा अपनी आत्मा का दिया जाना और नई वाचा की प्रतीक्षा करना जिसके बारे में पौलुस बोलता है।
>
> — डॉ. रॉबर्ट एल. प्लम्मर

> जब पौलुस इफिसियों 3 में उस पर प्रगट किए गए भेद के बारे में बात कर रहा था, तो वह सुसमाचार के बारे में बात कर रहा है। सुसमाचार एक भेद है। इसका अर्थ है कि यह छिपा हुआ है जब तक कि परमेश्वर हमारे लिए इसका खुलासा करने के लिए स्पष्ट कार्यवाही नहीं करता ताकि, निश्चित रूप से, सुसमाचार के संबंध में, यह एक सार्वजनिक भेद है। यह एक सार्वजनिक रहस्य है, यदि आप चाहेंगे। लेकिन यह सिर्फ पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा सुसमाचार की घोषणा के माध्यम से हमारे लिए प्रकट किया जा सकता है। अब, जब पौलुस भेद की बात करता है, जैसा कि इफिसियों 3 में, कभी-कभी वह मसीह की देह के रहस्य के बारे में बात कर रहा है जो कि सुसमाचार की घोषणा के माध्यम से वास्तविकता में लाई जाती है। और वहाँ इफिसियों 3 में वह कह रहा है, भेद यह है कि यहूदी और अन्यजाति एक दूसरे से प्रेम करते हैं और राज्य में एक साथ जैविक एकता में लाए जाते हैं। यह अद्भुत है। इसलिए, वह कहता है कि मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार इन जंगली अन्यजातियों को सुनाया जा रहा है। निश्चित रूप से, एक अन्यजाति होने के नाते, मुझे खुशी है कि यह अन्यजातियों के लिए आया। लेकिन यह एक भेद है ... वही एक है जो क्रूस पर लहू के द्वारा और अपनी आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा यहूदी और अन्य जातियों को एकजुट करता है।
>
> — डॉ. सैन्डर्स एल. विलसन

परमेश्वर ने प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के लिए जिन भेदों को प्रकट किया, उन्होंने नई वाचा वाले युग पर एक ऐसे दृष्टिकोण का नेतृत्व किया जिसे नए नियम के विद्वान अक्सर "उद्घाटित युगांत-विद्या"

या "अभी, लेकिन अभी तक नहीं" के रूप में वर्णित करते हैं। हम किसी भी शब्दावली को चुन सकते हैं, हम देख सकते हैं कि यीशु और नए नियम के लेखकों ने सिखाया कि अंतिम दिनों के लिए परमेश्वर की योजना में, नई वाचा के युग की पूर्ति तीन प्रमुख चरणों में होनी थी।

सबसे पहले, नई वाचा के युग का उद्घाटन यीशु के पहले आगमन में और उसके प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की सेवकाई में शुरू किया गया था। इसी कारण नया नियम यीशु और उसके प्रेरितों के दिनों के बारे में "अंतिम दिनों" के रूप से बोलता है। इब्रानियों 1:1-2 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है (इब्रानियों 1:1-2)।

यहाँ, इब्रानियों के लेखक ने यीशु की पृथ्वी वाली सेवकाई और उसके पाठकों के समय को "इन अन्तिम दिनों" के रूप में संदर्भित किया। जैसा कि यह अनुच्छेद संकेत देता है, यीशु द्वारा राज्य के उद्घाटन के साथ ही, पुराने नियम के प्रतिज्ञा किए हुए अंतिम दिन, संसार पर आ गए थे।

नया नियम जोर देकर कहता है कि नई वाचा के इस उद्घाटित चरण में वह सब कुछ शामिल था जिसे यीशु ने अपने देहधारण, मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, और पवित्र आत्मा के उँडेले जाने में पूरा किया था। इस विशेष समय में कलीसिया के लिए प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के आधारभूत कार्य में उनकी सेवकाई को भी शामिल किया गया था। इफिसियों 2:19-20 में, पौलुस ने इसे इस तरीके से पेश किया:

> ... परमेश्वर के घराने के हो गए और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो (इफिसियों 2:19-20)।

दूसरा, नई वाचा के युग की निरंतरता कलीसियाई इतिहास की पूरी अवधि में फैली हुई है। इस समय के दौरान, सुसमाचार की उद्घोषणा और परिवर्तनकारी प्रभाव के माध्यम से मसीह सभी राष्ट्रों में कलीसिया का प्रसार करता है।

यही कारण है कि नए नियम के लेखकों ने, 2 तीमुथियुस 3:1-5 जैसे स्थानों में, कलीसियाई इतिहास की संपूर्ण अवधि को अंतिम दिनों के रूप में नामांकित किया। वहाँ पर यह क्या कहता है उसे सुनिए:

> लेकिन इसे चिह्नित कर लें: पर यह स्मरण रख कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएँगे। क्योंकि मनुष्य स्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र, दयारहित, क्षमारहित, दोष लगानेवाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी, विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन् सुख-विलास ही के चाहनेवाले होंगे — वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना (2 तीमुथियुस 3:1-5)।

जिन पापों को यहाँ पर "अंतिम दिनों" के लिए सूचीबद्ध किया गया है वे पौलुस के दिनों में घटित हो रहे थे, और उनका होना पूरे इतिहास भर में और वर्तमान समय में भी जारी हैं।

इफिसियों 3:9-10 में पौलुस ने इस अवधि के चरित्र को मसीह में प्रकाशित एक भेद कि रूप में संदर्भित किया:

> ... उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सब के सृजनहार परमेश्‍वर में आदि से गुप्त था ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान ... प्रगट किया जाए।

इस प्रकाश में, कलीसियाई इतिहास की पूरी अवधि को नई वाचा वाले युग के रूप में मानने में हम सही हैं।

तीसरा, नई वाचा वाले युग के अंतिम दिन अपनी संपूर्णता में तब पहुँचेंगे जब मसीह लौटता है और पूरे इतिहास के लिए परमेश्वर के निर्णायक उद्देश्यों का पूरा करता है। यही कारण है कि नए नियम के लेखकों ने मसीह की वापसी के समय राज्य की संपूर्णता को "अंतिम दिनों" के रूप में वर्णित किया। यूहन्ना 6:39 में, यीशु ने अपने चेलों को बताया:

> और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ, परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँ (यूहन्ना 6:39)।

यहाँ पर पिता के साथ अपने संबंध के बारे में यीशु ने अपने चेलों को सिखाया। "अंतिम दिन" के लिए उसका संदर्भ उस अंतिम निर्णायक दिन की ओर आगे संकेत करता है जब वह महिमा में लौटेगा, मृतक जिलाए जाएंगे, और परमेश्वर संसार का न्याय करेगा।

इफिसियों 1:9-10 में, पौलुस ने भी इस समय का वर्णन एक भेद के रूप में किया है जिसे परमेश्वर ने मसीह में प्रकाशित किया। इन पदों में, पौलुस ने संपूर्णता का निम्न रूप से वर्णन किया:

> उसने [परमेश्वर की] इच्छा का भेद ... जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे (इफिसियों 1:9-10)।

जैसा कि नया नियम इंगित करता है, यीशु ने अपने पहले आगमन में नई वाचा का उद्घाटन किया, वह आज संसार भर में कलीसिया के माध्यम से नई वाचा को प्रकट करना जारी रखता है, और नई वाचा के युग के संपूर्ण दंड और आशीषें तब आएंगी जब मसीह सब पर अपनी महिमा प्रकट करता हुआ एक राजा के रूप में वापस आता है।

मसीह में नई वाचा की पूर्ति का पता लगाने के बाद, हम अब अपने अध्याय के दूसरे विषय को देखने की स्थिति में है: नई वाचा के युग का खुलासा करने वाले चरित्र पर आधारित पवित्र शास्त्र का हमारा आधुनिक अनुप्रयोग।

अनुप्रयोग

जैसा कि हम बाद के अध्यायों में देखेंगे, नई वाचा के युग में रहने वाले लोगों के लिए पवित्र शास्त्र के अनुप्रयोग के बारे में बहुत सारी बातें कही जानी है। इनमें अनगिनत सांस्कृतिक और व्यक्तिगत विचार हैं। लेकिन इस बिंदु पर, हम देखना चाहते हैं कि नई वाचा के तीन चरणों के बारे में नए नियम की शिक्षा आज हमारे जीवनों में बाइबल को लागू करने में कैसे मार्गदर्शन करते है। अनुप्रयोग के ये पहलू सामान्य हैं, लेकिन वे हमें इस बात के लिए अपरिहार्य दृष्टिकोण प्रदान करते हैं कि आज हमें अपने जीवनों में पवित्र शास्त्र का उपयोग कैसे करना है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

नाटकशाला में नाटक देखने वाले हर व्यक्ति को पता होता है कि जहाँ आप बैठते हैं, वह प्रदर्शन पर आपके दृष्टिकोण को प्रभावित करता है। एक ही चरित्र और कार्य, विभिन्न कोणों से बहुत अलग दिख सकते हैं। और पूरी प्रस्तुति को समझने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि इसे विभिन्न सीटों से एक से अधिक बार देखा जाए। कई तरीकों में, इसी तरह से यीशु और नए नियम के लेखकों ने कलीसिया को नई वाचा के युग में पवित्र शास्त्र को लागू करना सिखाया। विभिन्न लाभप्रद स्थिति से पवित्र शास्त्र की जाँच करने के द्वारा, हम बाइबल को अपने जीवनों में लागू करने के लिए अधिक सुसज्जित होते हैं।

मंच पर पवित्र शास्त्र को पढ़ते हुए मसीह के किसी विश्वासपात्र अनुयायी की कल्पना कीजिए जिसकी पृष्ठभूमि तीन बड़े भागों में विभाजित होती है। दर्शकों की ओर वाली दिशा से, हम देखते हैं कि मसीही व्यक्ति, मसीह द्वारा नई वाचा के उद्घाटन की पृष्ठभूमि के सामने बाइबल को पढ़ता है। दर्शकों के मध्य से, हम देखते हैं कि मसीही व्यक्ति, मसीह द्वारा नई वाचा की निरंतरता की पृष्ठभूमि के सामने बाइबल को पढ़ता है। और दर्शकों की विपरीत दिशा से, हम उसे मसीह द्वारा नई वाचा की संपूर्णता की पृष्ठभूमि के सामने बाइबल को पढ़ता हुआ देखते हैं। एक या किसी अन्य तरीके से, इन सभी तीनों दृष्टिकोणों को ध्यान में रखने के साथ बाइबल का अध्ययन करने के द्वारा मसीह के अनुयायियों को आधुनिक संसार के लिए पवित्र शास्त्र को लागू करना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, बाइबल का अध्ययन करते समय, विश्वासियों को प्रत्येक पवित्र शास्त्र को उससे संबंधित करने की आवश्यकता है जिसे मसीह ने पहले ही नई वाचा के उद्घाटन में पूरा किया है और उस हर बात पर विचार करना है जिसे मसीह ने अपनी सांसारिक सेवकाई में हमारे लिए पूरा किया। लेकिन हमें नई वाचा की निरंतरता के प्रकाश में पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं को भी देखना है और आज हमारे जीवन में पवित्र शास्त्र के महत्व की खोज करनी है। साथ ही, यह महत्वपूर्ण है कि हम पवित्र शास्त्र को उस दृष्टिकोण के माध्यम से देखें जिसे मसीह हमारे युग की संपूर्णता में पूरा करेगा और महिमा में मसीह की अद्भुत वापसी की तैयारी में जीवन को जीएं।

ऐसे कई तरीके हैं जिनमें हम नई वाचा के अनुप्रयोगों पर इन तीन दृष्टिकोणों का पता लगा सकते हैं, लेकिन हम सिर्फ दो महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा करेंगे। सबसे पहले, हम नई वाचा के युग में अनुप्रयोग के लिए कुछ सामान्य दिशानिर्देशों को सारांशित करेंगे। और दूसरा, हम अनुप्रयोग का एक उदाहरण प्रस्तुत करेंगे जो इन रणनीतियों को दर्शाता है। आइए कुछ सामान्य दिशा-निर्देशों के साथ शुरू करें।

दिशा-निर्देश

पहले के एक अध्याय में हमने अनुप्रयोग की प्रक्रिया को निम्न प्रकार से परिभाषित किया:

> बाइबल के दस्तावेज़ के मूल अर्थ को समकालीन श्रोताओं से उन तरीकों में उचित रीति से जोड़ना जो उनकी अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित करते हैं।

जैसा कि यह परिभाषा बताती है, पवित्र शास्त्र के प्रत्येक अनुप्रयोग में मूल अर्थ को समकालीन श्रोताओं से उचित रीति से जोड़ना शामिल है।

सबसे पहले, हमें उन तरीकों को पहचानने के द्वारा बाइबल के अनुच्छेद के मूल अर्थ को निर्धारित करने की आवश्यकता है जिनमें बाइबल के लेखकों ने अपने मूल श्रोताओं की अवधारणों, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित करने की कोशिश की। फिर, इस बात को निर्धारित करने के द्वारा कि बाइबल के अनुच्छेद को आज लोगों की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को कैसे प्रभावित करना चाहिए, हम इस मूल अर्थ को समकालीन श्रोताओं के लिए लागू कर सकते हैं। जैसा कि हमने अन्य अध्यायों में देखा है, युगांतरिक विकासों को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि मूल रूप से पवित्र शास्त्र का प्रत्येक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अनुच्छेद बाइबल के विश्वास के एक अलग चरण में रहने वाले लोगों के लिए लिखा गया था न कि हमारे। इसलिए, हमारे अध्याय में इस बिंदु पर, आइए उन तरीकों पर ध्यान-केंद्रित करें जिनमें युगांतरिक विकास पवित्र शास्त्र के मूल श्रोताओं को नई वाचा के युग में रहने वाले समकालीन श्रोताओं के साथ जोड़ते हैं।

यह देखने के लिए कि हमारे दिमाग में क्या है, हम दो दिशाओं की ओर संक्षेप में देखेंगे। सबसे पहले, हम पुराने नियम की नई वाचा के अनुप्रयोगों के बारे में कुछ सामान्य टिप्पणी करेंगे। फिर दूसरा, हम नए नियम के अनुच्छेदों के साथ भी ऐसा ही करेंगे। आइए पुराने नियम के साथ शुरू करें।

पुराना नियम

जैसा कि हमने एक पूर्ववर्ती अध्याय में देखा है, पुराना नियम बाइबल के इतिहास में छह प्रमुख वाचाओं का उल्लेख करता है, लेकिन पुराने नियम की पुस्तकों का लेखन इन वाचा वाले युगों में से सिर्फ दो में हुआ: मूसा और दाऊद वाली वाचा के युग। पुराने नियम का प्रत्येक अनुच्छेद परमेश्वर के उन लोगों की आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था जो या तो मूसा वाली वाचा में या दाऊद वाली वाचा के युग के दौरान रहते थे। इस तरह, पुराने नियम के अनुच्छेदों ने मूल रूप से परमेश्वर के लोगों के लिए उन अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं के समूहों को बताया जो वाचा वाले इन दो युगों के ईश्वरीय-ज्ञान वाले विकासों के लिए उपयुक्त थे।

इस कारण से, पुराने नियम के अनुच्छेदों से नई वाचा के युग के लिए अर्थ के संबंधों को बनाना आवश्यक है। मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम जानते हैं कि इस प्रक्रिया में एकमात्र अचूक मार्गदर्शक नया नियम है। इसलिए, ऐसे तरीकों को खोजना आवश्यक है जिनमें नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम को नई वाचा के सभी तीन चरणों के लिए लागू किया। उदाहरण के लिए, नया नियम हमें उन तरीकों के कई उदाहरण देता है जिनमें मसीह ने अपने पहले आगमन में पुराने नियम की शिक्षाओं को पूरा किया। यह उन तरीकों के लिए भी ध्यान आकर्षित करता है जिनमें मसीह पुराने नियम की शिक्षाओं को निरंतरता के दौर में पूरा करना जारी रखता है। इसके साथ ही, नया नियम उन तरीकों की ओर संकेत करता है जिनमें मसीह पुराने नियम की शिक्षाओं को नई वाचा की संपूर्णता में पूरा करेगा।

> बाइबल के सबसे महत्वपूर्ण विषयों में से एक परमेश्वर के राज्य का विषय है, और फिर भी यह विशेष वाक्यांश सिर्फ नए नियम में आता है। खैर, हम इसे पुराने नियम में हर जगह देखते हैं, विशेषकर भजन में इस उच्चारण के संबंध में, "प्रभु राज्य करता है।" नए नियम के लेखक पुराने नियम के विषयों को मसीह के आगमन के प्रकाश में ले रहे हैं, और इसलिए जब सुसमाचार के प्रचारक यीशु की शिक्षा को सारांशित करते हैं, तो वे स्वयं परमेश्वर और यीशु के राज्य के बारे में बात करते हैं, जब उसके वचन रिकॉर्ड किए जाए रहे हैं जो इस बारे में बात कर रहे हैं कि कैसे स्वर्ग का राज्य निकट है, परमेश्वर का राज्य निकट है। और इसलिए, जो कुछ यहोवा के लोगों और राष्ट्रों के ऊपर उसके राज्य के बारे में बात करता है, वह अब दाऊद के पुत्र, मसीहा, मसीह के रूप में सन्निहित है, ... जो इस्राएल में मंच पर आ चुका है ... हम इसे इन दोनों बातों के संदर्भ में देखते हैं कि प्रेरितों के काम 1 में कैसे मसीह का स्वर्गारोहण होता है और वह सिंहासन पर राज्य करता है, जब कि उसका स्वर्गारोहण हुआ और पुनरुत्थान का प्रचार किया जाता है और लोग पुनर्जीवित और स्वर्ग पर चढ़े मसीह की ओर आकर्षित हुए हैं, लेकिन अभी भी प्रभु के दिन का एक भविष्य वाला भाव है कि मसीह फिर से आएगा। जैसा कि प्रेरितों के काम 1 हमें बताता है, वह उसी रीति से वापस आएगा जैसे वह गया था, और अभी भी वह अंतिम उद्धार बाकी रहेगा जब परमेश्वर के लोगों को उस अंतिम छल-कपट और विद्रोह में परखा जाएगा जब शैतान को रिहा किया जाता है,

> लेकिन साथ में अंतिम समय पर जब मसीह आता है और शैतान की सभी योजनाओं के ऊपर विजयी होता है।
>
> — डॉ. ग्रेग पैरी

> उस तरीके को देखना सबसे आकर्षक चीज़ों में एक है जिसमें सुसमाचार ने यीशु को पुराने नियम के विषयों के प्रकाश में चित्रित किया। हम इसे कई अलग-अलग स्थानों में देखते हैं। मुख्य स्थानों में से एक जहाँ हम इसे देखते हैं वह है, हम मूसा के स्थान पर वास्तव में यीशु को चित्रित करना। वह कुछ मायनों में एक नए,दूसरे एवं उससे बड़े निर्गमन का नेतृत्व करने के लिए आने वाला दूसरा मूसा है। जब हम यीशु को दूसरे मूसा के रूप में सोचते हैं तो इसके कई उदाहरण सामने आते हैं। एक, निश्चित रूप से, अपने जल वाले अनुभव के बाद एकदम से उसका जंगल में जाने का विचार है। इसलिए, एक मायने में जब उसने यरदन नदी में बपतिस्मा लिया, उसका जल से होकर जाना वैसा ही है जैसे कि इस्राएली लोगों का लाल समुद्र से होकर निकलना और वहाँ से तुरंत जंगल में जाना। जंगल में वह इस्राएलियों के समान परीक्षाओं का अनुभव करता है, लेकिन वह विश्वासपात्र पुत्र है, जबकि इस्राएल अनाज्ञाकारी पुत्र था। उस जंगल वाले अनुभव में, यीशु नए निर्गमन के विजयी अगुवे के रूप में उभरता है जहाँ पर वह आता है और फिर मत्ती 5 में पहाड़ी उपदेश में जब यीशु को वहाँ पर नई व्यवस्था के देने वाले के रूप में दर्शाया गया तो वह एक नई व्यवस्था को देता है ... इसलिए आप बार-बार इस समन्वय को और सुसमाचारों एवं पुराने नियम के बीच इस एकता को और इस बात को देखते हैं कि यीशु उस कहानी को पूरा कर रहा है जो बहुत वर्षों पहले शुरू हुई थी।
>
> — डॉ. माइकल जे. क्रूगर

पुराने नियम के अनुच्छेदों को लागू करने के इस बुनियादी पैटर्न को ध्यान में रखकर, आइए नई वाचा वाले युग के लिए नए नियम के अनुप्रयोग को देखें।

नया नियम

पहली नजर में, ऐसा प्रतीत हो सकता है कि जब मसीही लोग नए नियम को लागू करते हैं तो युगांतरिक विकासों पर विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि नए नियम को नई वाचा के युग में लिखा गया था। लेकिन यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि संपूर्ण नए नियम की रचना नई वाचा के उद्घाटन चरण के दौरान की गई थी। आज, हम उस चरण में नहीं रहते हैं। इसके विपरीत, हम नई वाचा की निरंतरता में रहते हैं। इसलिए, जब हम नए नियम को अपने जीवनों के लिए लागू करते हैं, तो हमें इस युगांतरिक अंतर को ध्यान में रखने की आवश्यकता है।

नए नियम की पुस्तकें कलीसिया के संस्थापक अगुवों के हाथों से आई और शुरूआत में नई वाचा वाले युग के उद्घाटन के दौरान रहने वाले लोगों के लिए लिखी गई थीं। जो इन लेखकों ने लिखा उसमें हमारे लिए कई निहितार्थ हैं क्योंकि हम नई वाचा के युग की निरंतरता में रहते हैं। इसलिए, भले ही हम इन रचनाओं के लिखे जाने के हजारों वर्ष बाद रहते हैं, लेकिन फिर भी उनका हमारे ऊपर निर्विवाद अधिकार है।

आज हमारे जीवनों, और उस समय के बीच कुछ अंतरों पर विचार करें, जिसमें नया नियम लिखा गया था। उदाहरण के लिए, आज के विपरीत, मार्गदर्शन के लिए सीधे व्यक्तिगत अपील प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के लिए की जा सकती थी जो उस समय रह रहे थे। हम फिलेमोन की पुस्तक में इसे देखते हैं। इसके अलावा, व्यापक मुद्दों को कलीसिया के संस्थापक नेताओं की बातचीत के द्वारा तय किया जा सकता है, जैसा कि प्रेरितों के काम 15 में यरूशलेम की परिषद में। लेकिन हमारे समय में, ये संस्थापक प्राधिकरण हमारे पास हमारे बीच में नहीं रहते हैं। इसलिए, हमें मार्गदर्शन करने के लिए नए नियम के उनके उपदेशों के सारांशों पर निर्भर रहना होगा।

इसके अलावा, नए नियम में चमत्कारी और अलौकिक घटनाओं के कई उदाहरण हैं। यीशु और उसके प्रेरितों एवं भविष्यद्वक्ताओं को उनके अधिकार को स्थापित करने के लिए, इस तरह के कार्यों को करने हेतु विशेष रूप से वरदान दिया गया था। जबकि यह उस समय सच था, आज अधिकार सिर्फ स्वयं नए नियम के मानक द्वारा स्थापित किया गया है। यदि हम इस अंतर को भूल जाते हैं, तो हमें अपने समय में अक्सर झूठी अपेक्षाएं होंगी। सुनिश्चित होने के लिए, परमेश्वर नई वाचा की निरंतरता के दौरान कलीसिया में चमत्कार करना जारी रखे है, लेकिन हमें यह जानकर निराश नहीं होना चाहिए कि इस युग में इस तरह की घटनाएं उतनी आवृत्ति के साथ नहीं होते हैं जितने कि वे उस समय हुए जब यीशु और प्रेरित पृथ्वी पर रहते थे।

इसके अलावा, नए नियम के लेखकों ने स्वयं को मुख्य रूप से सैद्धांतिक और व्यावहारिक मुद्दों के लिए समर्पित किया, जो विशेष रूप से नई वाचा के उद्घाटन के लिए महत्वपूर्ण थे। उदाहरण के लिए, नए नियम में अपने यहूदी जड़ों से होकर अन्यजातियों के संसार में परमेश्वर के राज्य के फैलाव की तुलना में शायद ही किसी अन्य मुद्दे ने इतना ध्यान आकर्षित किया होगा। नए नियम में संबोधित किए गए एक के बाद एक विवाद ने इस बात से निपटारा किया है कि कैसे मसीह के अनुयायियों को पुराने नियम की प्रथाओं और अतिरिक्त यहूदी परंपराओं का पालन करना है या नहीं करना है। जबकि यह सच है कि आज कलीसिया के लिए इन शिक्षाओं के निहितार्थ हैं, फिर भी मसीही कलीसिया इनमें से कई मूलभूत विवादों से परे चली गई है। जैसे-जैसे सुसमाचार पूरे विश्व में फैलता जाता है, हम विभिन्न प्रकार के मुद्दों का सामना करते हैं।

> मैं कभी-कभी मेरे मन में यह इच्छा होती है कि मैं प्रेरितों के युग में पीछे जा पाता और प्रेरितों के प्रचार की सेवा को और जो चमत्कार उन्होंने किए और उस हर बात को जो उन्होंने कलीसिया के जीवन में शुरू किए देख पाता। और निश्चित रूप से, प्रारंभिक कलीसिया के कई सारे अनुभव उन अनुभवों के समान हैं, जो आज हमारे पास संसार में हैं। मेरा अर्थ है, संसार में कई स्थानों पर कलीसिया सताया हुआ समुदाय है, और हम उसी सुसमाचार पर विश्वास करते हैं जिस पर पहले विश्वासियों ने विश्वास किया था। लेकिन एक अर्थ यह भी है कि कलीसियाई इतिहास में प्रेरितों की सेवकाई एक अनोखे काल में अद्वितीय थी, और हम उस पवित्र शास्त्र को पढ़कर उनकी नींव पर निर्माण करते हैं जिसे उन प्रेरितों ने लिखा था। लेकिन प्रेरितों का पद कलीसिया के जीवन में जारी रहने वाला पद नहीं है। यह एक अनुठी बुनियादी सेवकाई है जिसे उन्हें सौपां गया था और अब हम आज कलीसिया में उनकी बुनियाद पर निर्माण करते हैं।
>
> — डॉ. फिलिप्प रायकेन

इस कारण से, जब हम नए नियम को आधुनिक संसार में लागू करते हैं, तो यह समझना महत्वपूर्ण है कि मूल अर्थ नई वाचा वाले युग के उद्घाटन चरण में दृढ़ता से आधारित है। हाथ में उस मूल अर्थ के

साथ, फिर हम नई वाचा वाले युग के भीतर आगे के विकासों को ध्यान में रखने के द्वारा इसे अपने समय के लिए लागू कर सकते हैं।

दोनों पुराने और नए नियम में, नई वाचा के अनुप्रयोग के लिए सामान्य दिशा-निर्देशों को देखने के बाद, आइए पवित्र शास्त्र में एक उदाहरण को देखें जो इन सिद्धांतों को समझाता है। हम अपने उदाहरण के रूप में युद्ध पर बाइबल के महत्व का उपयोग करेंगे।

उदाहरण

बाइबल से परिचित हर कोई जानता है कि यह दुष्ट आत्माओं और उनका पालन करने वाले राष्ट्रों के खिलाफ युद्ध के विषय पर बहुत ध्यान देता है। पुराने नियम की लगभग हर पुस्तक इस विषय पर एक या दूसरे तरीके से बात करती है। और नया नियम बार-बार संकेत देता है कि पुराने नियम में पाई जाने वाली बुराई के खिलाफ युद्ध नई वाचा के युग में जारी है।

> पुराने नियम में, हम अक्सर परमेश्वर को एक योद्धा, योद्धा के रूप में एक राजा, एक सैन्य नायक के रूप में चित्रित हुआ देखते हैं। मेरा अर्थ है, हमारे संदर्भ बहुत अधिक स्पष्टता से नजर नहीं आएंगे, हम इसे पूरी तरह से नहीं समझते हैं। लेकिन यह आम बात थी कि प्राचीन इस्राएल में जीवन की वास्तविकता युद्ध था ... फिरौन परमेश्वर के लोगों को जाने नहीं दे रहा था, इसलिए परमेश्वर ने क्या किया ... वहाँ पर सबसे पहले महामारी आई, लेकिन फिर लाल समुद्र में मिस्र की सेना को डुबाने के जैसे कार्य में परमेश्वर मूल रूप से उनके लिए लड़ने लगा। एक और उदाहरण। फिर मूसा और मरियम ने परमेश्वर की स्तुति करते हुए इस गीत को गया: रथों और सवारों ... घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में पटक दिया है। इस तरह परमेश्वर को योद्धा के रूप में गाया जा रहा है। और निश्चित रूप से हम देखते हैं कि, जब इस्राएल देश कनानियों के देश में आता है, तो परमेश्वर उनकी ओर से लड़ रहा है।
>
> — डॉ. डेविड टी. लैम्ब

इस विषय की प्रमुखता एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाती है। आज हम इसे अपने जीवनों में कैसे लागू कर सकते हैं? चाहे हम पुराना नियम या नया नियम पढ़ते हों, यदि हम इस बात पर पूरी जानकारी हासिल करना चाहते हैं कि यह विषय हमारे जीवन पर कैसे लागू होता है, तो हमें इसे मसीह में नई वाचा वाले युग के तीन चरणों के प्रकाश में देखना चाहिए।

सबसे पहले स्थान पर, हमें हमारे युग के उद्घाटन पर ध्यान देना चाहिए। नया नियम यह स्पष्ट करता है कि संसार में बुराई के खिलाफ युद्ध के विषय के कुछ पहलू यीशु की सांसारिक सेवकाई में अद्वितीय रूप से पूरे किए गए थे। यीशु ने स्वयं जो कुछ उसके चेलों के साथ उसकी सेवकाई में हो रहा थी उसे बुराई के ऊपर जीत के रूप में संदर्भित किया।

उदाहरण के लिए, लूका 10:18-19 में, हम यीशु के उत्तर को पढ़ते हैं जब उसके चेले दुष्टात्माओं को निकाल कर लौटे।

> मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था। मैं ने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है (लूका 10:18-19)।

साथ में, कुलुस्सियों 2:15 के अनुसार, यीशु ने क्रूस पर अपनी मृत्यु में दुष्ट आत्मिक शक्तियों को हराया:

> [यीशु ने] प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई। (कुलुस्सियों 2:15)

इसी तरह, इफिसियों 4:8 में, पौलुस ने मसीह के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण को युद्ध में उसकी जीत के रूप में संदर्भित किया।

> वह ऊँचे पर चढ़ा और बन्दियों को बाँध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए (इफिसियों 4:8)।

इन और इनके जैसे अनुच्छेदों के प्रकाश में, जब कभी हम पुराने या नए नियम में परमेश्वर के शत्रुओं के खिलाफ युद्ध के विषय पर आते हैं, तो हमें हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि नई वाचा वाले युग के उद्घाटन के दौरान इस युद्ध में मसीह ने अपनी भूमिका को कैसे पूरा किया। मसीह ने जो पहले ही पूरा कर लिया है, उसके अलावा पाप और मृत्यु की शक्तियों के ऊपर अंतिम निर्णायक जीत की कोई उम्मीद नहीं है।

> अपने पहले आगमन में मसीह ने शैतान के साथ, युद्ध का प्रदर्शन किया, या युद्ध को पूरा किया, या इसे युद्ध के रूप में चित्रित किया जा सकता है। और यह उत्पत्ति 3:15 के साथ शुरू हुआ जहाँ परमेश्वर ने पाप में गिरने के एकदम शुरूआत में, आदम और हव्वा से प्रतिज्ञा की कि एक उद्धारकर्ता आएगा। और फिर हम उसे क्रूस पर होता हुआ देखते हैं। शैतान का सिर कुचला गया, यीशु की एड़ी को डसा गया, मारा गया — जिस भी शब्द का आप उपयोग करना चाहते हैं — और फिर उसे मृतकों में से जी उठाया जाता है और शैतान पर उसकी पूरी जीत होती है।
>
> — डॉ. होवार्ड आएरिक

> कई मसीही लोग सोचते हैं कि मसीह बुराई को तब तक नष्ट नहीं करेगा जब तक कि वह समय के अंत में फिर से वापस नहीं आता है। लेकिन तथ्य यह है कि यीशु मसीह ने अपने पहले आगमन में बुराई का नाश किया। हम कह सकते हैं कि उसने सैद्धांतिक रूप से बुराई का नाश किया, अर्थात उसने क्रूस पर शैतान को हराया और अंतिम दूसरे आगमन के लिए नींव रखी। संसार में अभी भी बुराई है, और हम अभी भी इसमें रहते हैं, लेकिन यह बुराई विलुप्त होने के रास्ते पर है। उस लड़ाई में जिसे हमारे प्रभु यीशु मसीह ने लड़ा, उसने "प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई," और उसने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से शैतान के कार्य के ऊपर भारी विजय प्राप्त की।
>
> — डॉ. घासन खालफ, अनुवादित

हमारे युग के उद्घाटन के अलावा, जब कभी हम पवित्र शास्त्र में युद्ध के विषय को देखते हैं, तो हमें नई वाचा के युग की निरंतरता के लिए इसे लागू करने हेतु तैयार रहना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हालाँकि स्वयं मसीह ने अपने पहले आगमन में बुराई की अंतिम निर्णायक हार की शुरुआत की, नया नियम सिखाता है कि यह युद्ध अभी भी कलीसिया के पूरे इतिहास में हर एक विश्वासी के अनुभव का एक हिस्सा है।

उदाहरण के लिए, 2 कुरिन्थियों 10:4 में, पौलुस ने पुष्टि की कि सुसमाचार का प्रसार दुष्ट आत्माओं के खिलाफ युद्ध था। वहाँ उसने कहा:

> क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं (2 कुरिन्थियों 10:4)।

पौलुस ने इफिसियों 6:12 में इन्हीं तरीकों में कलीसिया के युद्ध का उल्लेख किया:

> क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं (इफिसियों 6:12)।

ध्यान दें कि इन दोनों अनुच्छेदों में मसीहों के रूप में जो युद्ध हम लड़ते हैं वह स्वभाव में आत्मिक है। ठीक उसी तरह जैसे यीशु ने हमारे युग के उद्घाटन में किया था, हम "मांस और लहू" के साथ युद्ध नहीं लड़ते हैं। हम "प्रधानों" और "अधिकारियों" के खिलाफ युद्ध लड़ते हैं, अर्थात, "उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से, जो आकाश में हैं।" मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान, लोगों के साथ युद्ध के बजाय, हम शैतान और उन अन्य दुष्ट आत्माओं के साथ युद्ध में हैं जो इस संसार में कार्यरत हैं। 2 कुरिन्थियों 5:19-20 में, पौलुस ने इन वचनों को लिखा:

> [परमेश्वर ने] मेलमिलाप का वचन हमें सौंप दिया है। इसलिये, हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा विनती कर रहा है। हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं: कि परमेश्वर के साथ मेलमिलाप कर लो (2 कुरिन्थियों 5:19-20)।

नई वाचा की निरंतरता के दौरान रहने वाले परमेश्वर के लोग होने के नाते, हम अपने साथी मनुष्यों के खिलाफ योद्धा नहीं हैं। इसके विपरीत, हम "मसीह के राजदूत" हैं जो मसीह के सुसमाचार के प्रसार के माध्यम से मनुष्यों को पाप के प्रभुत्व से बचाने की कोशिश करते हैं। हम लोगों से यह निवेदन करते हुए शैतान के राज्य की हार को आगे बढ़ाते हैं कि, "परमेश्वर के साथ मेलमिलाप कर लो।"

इसलिए, इसमे कोई आश्चर्य नहीं कि 2 कुरिन्थियों 2:14 में पौलुस ने सुसमाचार की सेवकाई का वर्णन मसीह की विजय परेड के रूप में भी किया:

> परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिये फिरता है (2 कुरिन्थियों 2:14)।

चाहे हम पुराने नियम से या नए नियम से युद्ध के उदाहरणों को प्रस्तुत कर रहे हों, मसीह के अनुयायियों को नई वाचा की निरंतरता के दौरान, अपनी दैनिक सेवकाई में इस विषय को लागू करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

> मसीह आज विभिन्न तरीकों से कलीसिया के माध्यम से बुराई के खिलाफ युद्ध को पूरा करता है, लेकिन इस पर विचार करने के लिए प्रमुख श्रेणी यह है कि मसीह का राज्य जैसा कि हम आमतौर पर राज्यों के बारे में सोचते हैं उसकी तुलना में एक अलग श्रेणी का है। यह यीशु के दिनों में सच था जब उन लोगों ने उसे गलत

> समझा कि वह एक राजनीतिक राज्य स्थापित कर रहा है, यह आज भी उतना ही सच है जब, हमारे राष्ट्रिय या जातीय या सामाजिक आर्थिक हितों के कारण, हम मसीह के युद्ध को क्रूस के युद्ध के रूप में नहीं बल्कि मुकुट या तलवार के युद्ध के रूप में देखना चाहते हैं। पौलुस हमें इफिसियों 6 में इस तरह के आत्मिक युद्ध के लिए दिशानिर्देश देता है। हमें प्रार्थना करनी है। हमें सुसमाचार को बांटना है। हम विश्वास करना है। हमें धार्मिकता और परमेश्वर के वचन के प्रमुख साधन का अभ्यास करना है ... वास्तव में, मार्टिन लूथर ने, अपने "अ माइटी फोर्ट्रेस" में उस वचन को सभी सांसारिक शक्तियों से ऊपर बताया। इस तरह, यह परमेश्वर का वचन है जो परमेश्वर के सेवक पुत्र, यीशु मसीह के माध्यम से, मसीह के आत्मिक युद्ध की पूर्णता के रूप में प्रबल होगा। इसलिए, हमारे लिए इसका अर्थ यह है कि हमें मसीह के पैटर्न का अनुसरण करना होगा, क्रूस के आकार का जीवन। जैसा कि फिलिप्पियों 2 कहता है, अपने आप में यही स्वभाव रखने के द्वारा हम मसीह का अनुसरण करते हैं, ताकि सुसमाचार विशिष्ट दिखाया जाए, और मसीही धर्म को उन अन्य धर्मों से अलग दिखाया जाए, जो धर्म को मुख्यतः अवपीड़क के रूप में देखते हैं। कहने के लिए, मसीही धर्म और इस्लाम के बीच प्रमुख विरोधाभासों में से एक यह है। इस्लाम परमेश्वर में गैर-अवपीड़क विश्वास की कल्पना नहीं कर सकता, और मसीही धर्म मौलिक रूप से क्रूस का, आत्म-परित्याग का, दूसरों के लिए अपने जीवनों को देने का धर्म है, क्योंकि मसीह ने हमारे लिए अपना जीवन दिया, इसलिए यह, बलिदान और मसीह के उदाहरण का मॉडल बनने के लिए बुलाहट है ताकि अन्य लोग उसे प्रभु मानने के लिए स्वेच्छा से आएं।
>
> — रेव्ह. माइक ग्लोडो

नया नियम न केवल युद्ध के विषय को हमारे युग के उद्घाटन और निरंतरता के साथ, बल्कि नई वाचा के युग की संपूर्णता के साथ भी जोड़ता है।

जिस प्रकार अपने पहले आगमन में मसीह ने स्वयं युद्ध किया, उसी प्रकार जब वह महिमा में लौटता है तो बुराई के खिलाफ युद्ध को पूरा करेगा। दूसरे आगमन पर, उसके क्रोध के पात्र के रूप में आत्मिक शक्तियों और उसकी दया के पात्र के रूप में मनुष्यों के बीच जो अंतर उसने बनाया था, वह मिट जाएगा। प्रकाशितवाक्य 19: 11-15 में, यूहन्ना ने आने वाली लड़ाई का वर्णन इस तरह किया:

> फिर मैं ने स्वर्ग को खुला हुआ देखा, और देखता हूँ कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वासयोग्य और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और युद्ध करता है ... स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे है। जाति जाति को मारने के लिये उसके मुँह से एक चोखी तलवार निकलती है। "वह लोहे का राजदण्ड लिये हुए उन पर राज्य करेगा" (प्रकाशितवाक्य 19:11-15).

कई मायनों में, बुराई के खिलाफ अंतिम लड़ाई लड़ते हुए मसीह का यह दृश्य नए आकाश और नई पृथ्वी में जीत और अनन्त जीवन के लिए हमारी आशा है। जब पाप और मृत्यु की अंतिम हार हो चुकी होगी, तो मसीह राज्य करेगा और अपने सभी अनुयायियों को जीत में अपने साथ राज्य करने के लिए आमंत्रित करेगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> बाइबल में शायद युद्ध का विषय, विशेषकर पुराने नियम में दिखाई देता है , और परमेश्वर का दंड और उसका क्रोध, और यह कैसे प्रकट होता है और अंत के समय में कैसा दिखता है यह एक बड़ा विषय है ... लेकिन नए नियम में हमारे पास दो अलग-अलग तरीके हैं जिनमें यह विषय विकसित हुआ। पहला यह यीशु के साथ है। वह पाप पर युद्ध करने के लिए एक दिव्य योद्धा के रूप में आता है, लेकिन इस बार पापी पर नहीं बल्कि स्वयं पाप पर। वह, कुछ मायनों में, यहाँ पर एक पीड़ित व्यक्ति है। वह क्रोध लाने वाले व्यक्ति के बजाय ऐसा व्यक्ति बनता है जो परमेश्वर के संपूर्ण क्रोध को बर्दाश्त करता है। अभी, पापी लोग स्वयं को उन लोगों के रूप में जिन्होंने मसीह में उस दंड का अनुभव किया है, मसीह में छिपने या उसके साथ मेलमिलाप करने के द्वारा, अंत के समय परमेश्वर के क्रोध से बच जाते हैं। ताकि जब मसीह आता है, वह अपने लोगों के साथ आ रहा है, और वह आएगा, उन लोगों के खिलाफ युद्ध करेगा जिन्होंने विश्वास करके पश्चाताप नहीं किया है और न उसके साथ मेलमिलाप किया है। और, कुछ मायनों में, इस अंत समय के दंड के चित्रों के रूप में हमें जल प्रलय में, इस्राएल और प्रतिज्ञा किए हुए देश के साथ, यहाँ तक कि इस्राएल के साथ युद्ध करते हुए अश्शूर और बाबुल के ये युद्ध के चित्र मिलते हैं। लेकिन ये सभी उसके चित्र हैं, जो वास्तव में, मसीह ने हमारे लिए भी किया है। इस तरह दो चित्र हैं: पहला, परमेश्वर का अनुग्रह — कि वह उस युद्ध और क्रोध से होकर निकला और हमारे लिए इसके अभिशाप का अनुभव किया, लेकिन वहाँ पर साथ में परमेश्वर का न्याय भी है। वह वापस आ रहा है और जितने लोगों ने उसके साथ मेलमिलाप नहीं किया है, वह उसी दंड का अनुभव करेगा।
>
> — डॉ. माईल्स वैन पैल्ट

हमें, विजय प्राप्त करने वाले योद्धा के रूप में मसीह की वापसी की महान संपूर्णता के प्रकाश में पूरे पवित्र शास्त्र में पाए जाने वाले युद्ध के विषय की व्याख्या करने को हमेशा याद रखना चाहिए।

जिस तरह नया नियम युद्ध के विषय का प्रयोग करता है वह हमारे लिए शिक्षाप्रद है जब हम पवित्र शास्त्र को अपने समय में लागू करते हैं। निश्चित रूप से, हमें हर एक विषय का एक-एक करके अध्ययन करना है क्योंकि नया नियम उन्हें अलग-अलग तरीकों में विकसित करता है। फिर भी, किसी भी बाइबल के विषय को और अधिक पूरी तरह से लागू करने के लिए, हमें यह देखना चाहिए कि यह मसीह में नई वाचा वाले युग के उद्घाटन, निरंतरता और संपूर्णता के प्रकाश में, कैसे देखा जाता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम किसी भी विषय की खोज की शुरूआत कैसे करते हैं, चाहे हम पुराने में शुरू करें या नए नियम में, मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम इन विषयों को यह पता लगाने के द्वारा लागू कर सकते हैं कि नई वाचा के तीनों चरणों में वे कैसे पूरे होते हैं।

उपसंहार

आधुनिक अनुप्रयोग और नई वाचा के इस अध्याय में, हमने उन तरीकों पर ध्यान दिया जिनमें मसीह में नई वाचा को आधुनिक संसार के लिए बाइबल के हमारे अनुप्रयोग को प्रभावित करना चाहिए। हमने ध्यान दिया कि कैसे नई वाचा के लिए पुराने नियम की आशाओं की पूर्ति को मसीह में हमारे युग के

उद्घाटन, निरंतरता और संपूर्णता में देखा जा सकता है। और हमने स्पष्ट किया कि कैसे आधुनिक जीवन के लिए पुराने और नए नियमों के हर एक विषय के अनुप्रयोग को नई वाचा के इन्हीं तीन चरणों के साथ अनुरूप होना चाहिए।

मसीह में नई वाचा कोई छोटी-मोटी बात नहीं हैं। बल्कि, यह पूरे इतिहास के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों का चरम बिंदु है। और इस रूप में, हम अपने आधुनिक संसार में बाइबल के हर हिस्से को कैसे लागू करते हैं, इस बात को मसीह में नई वाचा प्रभावित करती है। मसीह के अनुयायियों के रूप में, हमें पवित्र शास्त्र को उस प्रकाश में पढ़ना चाहिए जिस तरह से परमेश्वर मसीह में अपने उद्देश्यों को पूरा करता है। हम पीछे मुड़कर उस बात को देखते हैं जो मसीह पहले ही कर चुका है, हम उसे देखते हैं जो वह अभी कर रहा है, और हम भविष्य की ओर उस बात को देखते हैं जिसे वह तब पूरा करेगा जब वह वापस आता है। इसके बाद ही नई वाचा के लोगों के रूप में हम पवित्र शास्त्र को उचित रीति से अपने आधुनिक संसार के लिए लागू करेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।